Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

म्यांमार के अंतरराष्ट्रीय संबंधों और राष्ट्र–निर्माण प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका

रश्मि बाजपेयी
शोध छात्रा, श्यामा प्रसाद मुखर्जी डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 8, Issue 1
Page Number : 210-213

Publication Issue :
January-February-2025

Article History
Accepted : 20 Jan 2025
Published : 05 Feb 2025

शोधसारांश – म्यांमार, जिसे पूर्व में बर्मा के नाम से जाना जाता था, एक बहुसांस्कृतिक, बहुजातीय और बहुधार्मिक राष्ट्र है, जहाँ महिलाओं ने ऐतिहासिक और समकालीन दोनों संदर्भों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पारंपरिक रूप से, म्यांमार समाज में महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त रहा है, किंतु राजनीतिक संघर्ष, औपनिवेशिक शासनों और सैन्य तानाशाही के दौर ने उनकी स्थिति को जटिल बना दिया।

यह लेख म्यांमार के अंतरराष्ट्रीय संबंधों एवं राष्ट्र–निर्माण में महिलाओं के योगदान का विश्लेषण करता है, तथा समकालीन परिप्रेक्ष्य में उनके संघर्षों और उपलब्धियों का समीक्षात्मक अवलोकन प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: म्यांमार, आंग सांग सू की, लोकतंत्र, महिलाएँ।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: महिलाओं की भूमिका का प्रारंभिक स्वरूप

पारंपरिक सामाजिक संरचना में महिला स्थिति– म्यांमार की पारंपरिक संस्कृति में महिलाओं को व्यापार, पारिवारिक प्रबंधन और धार्मिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका दी गई थी। औपनिवेशिक युग से पूर्व महिलाएँ संपत्ति की मालिक भी बन सकती थीं और सामाजिक निर्णयों में प्रभावशाली भूमिका निभाती थीं (Tharaphi Than, 2014)।

औपनिवेशिक प्रभाव और राजनीतिक चेतना– ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन (1824–1948) ने महिलाओं की पारंपरिक स्थिति को प्रभावित किया। हालांकि, इसी काल में महिलाओं में राजनीतिक चेतना का प्रसार हुआ और वे स्वतंत्रता आंदोलनों का हिस्सा बनीं। श्थाकिनश आंदोलन और बाद में बर्मा वीमेंस नेशनलिटी लीग (BWNL) ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को संस्थागत रूप प्रदान किया (Charney, 2009)।

स्वतंत्रता के बाद: महिलाओं की राजनीतिक भूमिका

प्रारंभिक गणतांत्रिक युग (1948–1962)– स्वतंत्रता के पश्चात् महिलाओं की भागीदारी में आशाजनक वृद्धि देखी गई। संसद में महिलाओं की उपस्थिति, विभिन्न मंत्रालयों में नियुक्तियाँ और कूटनीति क्षेत्र में प्रतिनिधित्व आरंभ हुआ। इस दौर में महिला संगठनों ने समाज सुधार और राष्ट्र निर्माण के मुद्दों पर सक्रिय कार्य किया।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सैन्य शासन और महिलाओं की स्थिति (1962–2011)– जनरल ने विं के नेतृत्व में सैन्य शासन ने लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को बाधित किया, जिससे महिलाओं की राजनीतिक स्थिति सीमित हो गई। यद्यपि कुछ महिलाएँ सेना से संबद्ध संगठनों के माध्यम से सक्रिय रहीं, परंतु स्वतंत्र आवाजों को दमन का सामना करना पड़ा (Hlaing, 2012)।

लोकतांत्रिक संक्रमण और आंग सान सू की का उदय– आंग सान सू की ने म्यांमार में लोकतंत्र और मानवाधिकारों के संघर्ष को वैश्विक मंच पर प्रतिनिधित्व प्रदान किया। नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी (NLD) के नेतृत्व में उन्होंने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को प्रेरणा दी। 1991 में नोबेल शांति पुरस्कार प्राप्त कर उन्होंने विश्व समुदाय का ध्यान म्यांमार की स्थिति पर केंद्रित किया (Steinberg, 2010)।

म्यांमार के अंतरराष्ट्रीय संबंधों में महिलाओं की भूमिका

वैश्विक मंचों पर म्यांमार की महिला नेतृत्व– आंग सान सू की के अतिरिक्त भी कई म्यांमार की महिलाएँ संयुक्त राष्ट्र, ASEAN और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रतिनिधित्व कर रही हैं। विशेषकर, मानवाधिकार, शांति निर्माण और शरणार्थी संकट के मुद्दों पर महिलाओं की सक्रियता रही है।

अंतरराष्ट्रीय सहायता और महिलाओं के कार्यक्रम– संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP), संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन (UN Women) तथा ASEAN महिला संगठनों के माध्यम से म्यांमार की महिलाओं को सशक्त करने के लिए अनेक योजनाएँ चलाई गईं। इन पहलों का उद्देश्य महिलाओं को राष्ट्र निर्माण में सहभागी बनाना है (UN Women, 2020)।

कूटनीति में महिला उपस्थिति– हाल के वर्षों में, महिला राजनयिकों, सलाहकारों और प्रतिनिधियों की संख्या में वृद्धि हुई है। उदाहरणस्वरूप, हाउ डू सुज़ी और जो मिन थॉन जैसी महिला कूटनीतिज्ञों ने ASEAN वार्ताओं और शांति वार्ताओं में प्रमुख भूमिका निभाई है।

राष्ट्र–निर्माण प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका

शांति प्रक्रिया और महिला भागीदारी– 2015 में म्यांमार ने नेशनवाइड सेसफायर एग्रीमेंट (NCA) पर हस्ताक्षर किए। इस प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी सीमित रही, किंतु नागरिक समाज संगठनों ने महिलाओं की समावेशिता के लिए प्रयासरत अभियान चलाए। 2020 में Women, Peace and Security एजेंडा को अपनाने की दिशा में म्यांमार ने पहल की (Kramer, 2015)।

शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण– शैक्षिक संस्थानों में महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (MSMEs) में उनकी सक्रियता ने राष्ट्र निर्माण को आधार प्रदान किया है। महिलाओं द्वारा संचालित संस्थानों ने ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तनकारी कार्य किए हैं।

कोविड–19 महामारी और महिला नेतृत्व– महामारी के दौरान स्थानीय स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं, जागरूकता अभियानों और राहत कार्यों में महिलाओं ने नेतृत्वकारी भूमिका निभाई। इससे सामाजिक लचीलापन बढ़ाने में योगदान मिला।

म्यांमार में महिलाओं कि भूमिका का तुलनात्मक ग्राफिकल विश्लेषण

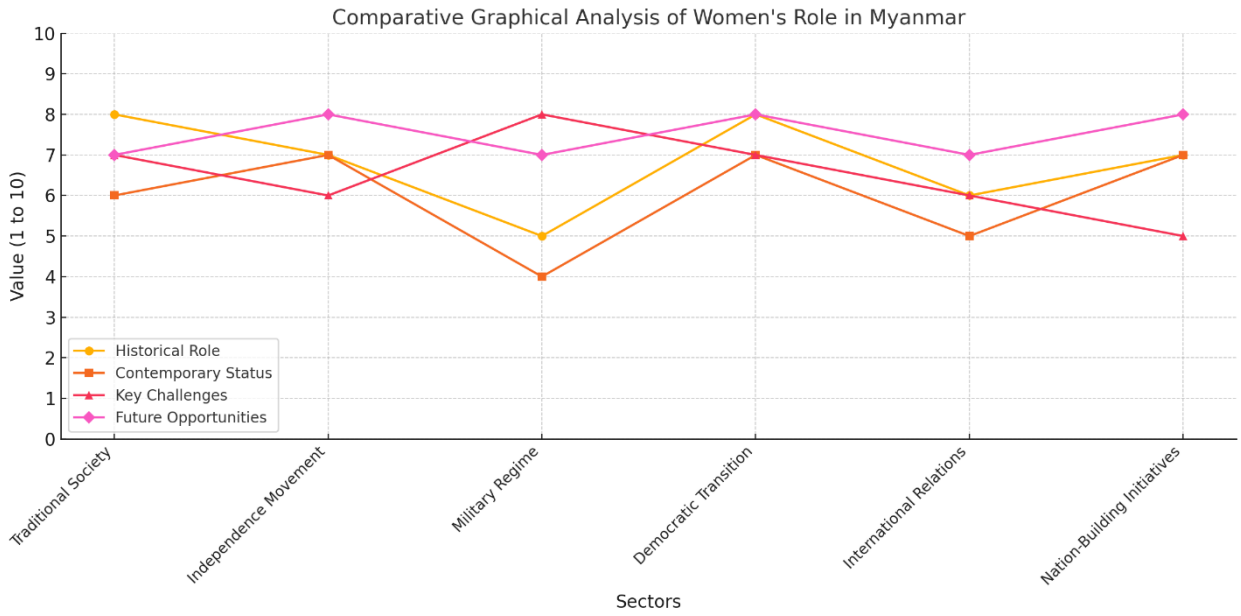

चुनौतियाँ और सीमाएँ

संरचनात्मक बाधाएँ– सैन्य वर्चस्व, लैंगिक भेदभाव और पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाएँ महिलाओं के पूर्ण सशक्तिकरण में बाधा हैं। 2008 के संविधान ने महिलाओं को सैद्धांतिक समानता प्रदान की, परंतु व्यावहारिक रूप में कार्यान्वयन सीमित रहा (Cheesman, 2015)।

सशस्त्र संघर्ष और महिलाओं की पीड़ा– जातीय संघर्षों के चलते महिलाओं को बलात्कार, विस्थापन और हिंसा का शिकार होना पड़ा। रोहिंग्या संकट में भी महिलाओं ने अत्यधिक पीड़ा झेली और अंतरराष्ट्रीय मंच पर इनके अधिकारों की रक्षा हेतु व्यापक प्रयासों की आवश्यकता महसूस हुई।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व में असमानता– हालांकि महिला राजनीतिक भागीदारी बढ़ी है, परंतु उच्च स्तर पर उनकी उपस्थिति अभी भी सीमित है। संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगभग 10: तक ही सीमित रहा है (Inter–Parliamentary Union, 2023)।

संभावनाएँ और भविष्य की दिशा

महिला नेतृत्व का सशक्तिकरण– स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिला नेतृत्व को प्रोत्साहित करने हेतु समर्पित नीतियों की आवश्यकता है। गति तंत्रों (quota systems) और महिला उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम इस दिशा में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

नागरिक समाज की भूमिका– महिला अधिकार समूहों, युवा संगठनों और शैक्षिक संस्थाओं को लैंगिक समानता हेतु अभियान और जागरूकता कार्यक्रमों को विस्तार देना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग– संयुक्त राष्ट्र, ASEAN और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों के सहयोग से म्यांमार में महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए अधिक संसाधन और रणनीतिक समर्थन आवश्यक है।

निष्कर्ष– म्यांमार के अंतरराष्ट्रीय संबंधों और राष्ट्र–निर्माण प्रक्रिया में महिलाओं ने ऐतिहासिक रूप से प्रेरणादायक योगदान दिया है। यद्यपि सैन्य शासन, संघर्ष और संरचनात्मक चुनौतियों ने उनके मार्ग को

कठिन बनाया, फिर भी उन्होंने सामाजिक परिवर्तन, शांति निर्माण और वैश्विक मंचों पर म्यांमार की आवाज बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आगामी वर्षों में यदि महिला सशक्तिकरण को रणनीतिक दृष्टि से प्रोत्साहित किया जाए, तो म्यांमार का लोकतांत्रिक और समावेशी विकास संभव हो सकेगा।

संदर्भ

1. चीज़मैन, निक, ओपोज़िंग द रूल ऑफ लॉः हाउ म्यांमारश्ज़ कोट्र्स मेक लॉ एंड ऑर्डर, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2015
2. चार्नी, माइकल, अ हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न बर्मा, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2009
3. ह्लाइंग, क्याव यिन, अंडरस्टैंडिंग रीसेंट पॉलिटिकल चेंजेज़ इन म्यांमार, कंटेम्परेरी साउथईस्ट एशिया, 2012
4. क्रेमर, टॉम, एथनिक आर्म्ड कॉन्फ्लिक्ट एंड टेरिटोरियल एडमिनिस्ट्रेशन इन म्यांमार, ट्रांसनेशनल इंस्टिट्यूट, 2015
5. स्टाइनबर्ग, डेविड आई., बर्मा/म्यांमारः व्हाट एवरीवन नीड्स टू नो, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2010
6. थाराफी थान, वीमेन इन मॉडर्न बर्मा, रूटलेज, 2014
7. यू.एन. वीमेन, म्यांमार जेंडर इक्वालिटी प्रोफाइल, 2020
8. इंटर–पार्लियामेंटरी यूनियन (आई.पी.यू.), वीमेन इन पार्लियामेंट रिपोर्ट, 2023